www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 16 रोहतक, 21 सितम्बर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

पाप क्षमा के भ्रम में फँसे लोग

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

पाप क्षमा के भ्रमजाल में बाबों के चंगुल में फँसते जा रहे हैं लोग। ईश्वर तो किसी के पाप क्षमा करता नहीं, फिर बाबों के पास ऐसी क्या शक्ति है जो लोगों के पाप क्षमा करने के समारोहों का आयोजन कर रहे हैं। ईश्वर किसी के पाप क्षमा नहीं करता, कहते हैं— ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा करता है। पहले तो यह समझ लेना अति आवश्यक है कि पापी ईश्वर का भक्त हो ही नहीं सकता। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में लिखते हैं। ईश्वर किसी के पाप क्षमा नहीं करता। क्योंकि जो पाप क्षमा करे तो उसका न्याय नष्ट हो जाये और सब मनुष्य महापापी हो जायें। क्योंकि क्षमा की बात सुन ही के उनको पाप करने में निर्भयता और उत्साह हो जाये। जैसे राजा अपराधियों के अपराध को क्षमा कर दे तो उत्साह पूर्वक अधिक-अधिक बड़े-बड़े पाप करें, क्योंकि राजा अपराध क्षमा कर देगा और उनको भी भरोसा हो जाये कि राजा से हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा करने से अपने अपराध छुड़ा लेंगे और अपराध नहीं करते वे भी अपराध न करने से न डरकर पाप करने में प्रवृत्त हो जायेंगे। इसलिये सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है, क्षमा करना नहीं।

ईश्वर दयालु और न्यायकारी है—

दया और न्याय का नाम मात्र ही भेद है। क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है, वही दया से। दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करने से बन्द होकर दु:खों को प्राप्त न हो। यही दया कहलाती है जो पराये दु:खों को छुड़ाना। जिसने जैसा जितना बुरा कर्म किया हो, उसको उतना वैसा ही दण्ड देना चाहिए, उसी का नाम न्याय है। और जो अपराधी को दण्ड न दिया जाये तो दया का नाश हो जाये। क्योंकि एक अपराधी डाकू को छोड़ देने से सहस्त्रों मनुष्यों को दु:ख प्राप्त होता है, वह दया किस प्रकार हो सकती है? दया वही है कि उस डाकू को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना डाकू पर और उस डाकू को मार देने से अन्य सहस्त्रों मनुष्यों पर दया प्रकाशित होती है।

आत्मा के बाहर-भीतर व्यापक परमेश्वर—

कहीं ईश्वर को ढूढ़ने की आवश्यकता ही नहीं है। वह सबके अन्दर विराजमान है, पवित्र आत्मा का मिलन परमात्मा से होता है, दुष्ट आत्मा का नहीं। जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष, दु:ख छूटकर परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। पूर्व किये पापकर्मों का फल तो भोगना पड़ेगा परन्तु भविष्य में आत्मा पवित्र हो जाने पर पाप करने से छूट जाएगा और जब पाप कर्म नहीं करेगा तो दु:ख कैसे आवेंगे? दु:ख तो पाप कर्मों से ही आता है। ईश्वर की प्रार्थना उपासना का फल पृथक् होगा, इससे आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख होता है। क्योंकि जिस ईश्वर ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रक्खे हैं, उसका गुण-भूल जाना, ईश्वर को ही न मानना मूर्खता है। कहते हैं—जब परमेश्वर के श्रोत्र, नेत्रादि इन्द्रियां नहीं हैं, फिर वह बिना इन्द्रियों के काम कैसे कर सकता है?

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षु: स शृणोत्यकर्ण:।
स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्तिवेत्ता तमाहुरग्रंथपुरुषं पुराणम्॥

यह [यह श्वेताश्वतर उपनिषद् 3/19] का वचन है—परमेश्वर के हाथ नहीं परन्तु शक्तिरूप हाथ से सबका रचन ग्रहण करता, पग नहीं परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान्, चक्षु का गोलक नहीं, परन्तु सबको यथावत् देखता, श्रोत्र नहीं तथापि सब की बातें सुनता, अन्त:करण नहीं, परन्तु सब जगत् को जानता है और उसको अवधि सहित जानने वाला कोई नहीं, उसी को सनातन, सबसे श्रेष्ठ, सब में पूर्ण होने से 'पुरुष' कहते हैं। वह इन्द्रियों और अन्त:करण के बिना अपने सब काम करने की सामर्थ्य रखता है।

परमात्मा पूर्ण ज्ञानी है—

क्योंकि ज्ञान उसको कहते हैं कि जिससे ज्यों का त्यों जाना जाय। अर्थात् जो पदार्थ जिस प्रकार का हो, उसको उसी प्रकार जानने का नाम 'ज्ञान' है। जब परमेश्वर अनन्त है तो उसको अनन्त ही जानना ज्ञान, उससे विरुद्ध जानना अज्ञानता है। उदाहरणत: एक काल्पनिक प्रतिमा को प्रतिमा मानना ज्ञान और उस प्रतिमा को ईश्वर मानना अज्ञान है।

ईश्वर का अवतार मानना भ्रमजाल एवं अज्ञानता है—

कहते हैं कि ईश्वर अवतार न लेवे तो कंस-रावणादि दुष्टों का नाश कैसे हो सके? यह जानना आवश्यक है कि जो जन्मा है उसकी मृत्यु अवश्य होती है। जो ईश्वर अवतार शरीर धारण किये बगैर जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करता है, उसके सामने कंस-रावण एक कीड़ी के समान भी नहीं। वह सर्वव्यापक होने से कंस-रावण आदि के शरीरों में भी परिपूर्ण हो रहा है, जब चाहे उसी समय मर्म छेदन कर नाश कर सकता है। भला इस अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव युक्त परमात्मा को एक क्षुद्र जीव के मारने के लिये जन्म-मरण युक्त कहने वाले को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है?

और कोई कहे भक्तजनों का उद्धार करने के लिए जन्म लेता है तो भी सत्य नहीं, क्योंकि जो भक्तजन ईश्वर की आज्ञानुसार चलते हैं, उनका उद्धार करनेका पूर्ण सामर्थ्य ईश्वर में है। क्या ईश्वर के पृथिवी, सूर्य, चन्द्रादि जगत् को बनाने, धारण, प्रलय करने रूप कर्मों से कंस-रावणादि का वध और गोवर्धनादि पर्वतों का उठाना बड़े कर्म हैं? जो कोई इस सृष्टि में परमेश्वर के कर्मों का विचार करें तो 'न भूतो न भविष्यति' ईश्वर के सदृश न कोई हुआ, न है और न होगा।

और युक्ति से भी ईश्वर का जन्म सिद्ध नहीं होता। जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे कि गर्भ में आया वा मुट्ठी में भर लिया, ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता, क्योंकि आकाश अनन्त और सब में व्यापक है। इससे आकाश न बाहर आता न भीतर आता, वैसे ही अनन्त सर्वव्यापक परमात्मा के होने से उसका आना जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता। जाना व आना वहाँ सिद्ध हो सकता है, जहाँ न हो। क्या परमेश्वर गर्भ में व्यापक नहीं था जो कहीं से आया? और बाहर नहीं था जो भीतर से निकला? ऐसा ईश्वर के विषय में कहना और मानना

शेष पृष्ठ 7 पर....

प्राचीन काल में भारत शिल्प-शिरोमणि था

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

सभ्यता, संस्कृति और मानव जीवन के विकास में शिल्प विद्या का विशेष महत्त्व रहा है। शिल्प विद्या से ही मानव ने अपने नैमित्तिक जीवन के कार्य सहज और सुगम बना लिये। आवश्यकतानुसार मानव ने विभिन्न प्रकार के यन्त्र बनाये जिनकी सहायता से कम से कम श्रम द्वारा अधिक से अधिक कठिन व असम्भव कार्यों को आसान बना लिया था। प्राचीन ग्रन्थों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि शिल्पकला-कौशल में भारत देश यूरोपियन देशों से बहुत आगे था। विदेशी लोग शिल्पज्ञान प्राप्त करने हेतु भारत में आते थे। यह एक बड़ी विडंबना रही कि हमारे विभिन्न शिल्पविद्या और यान्त्रिक विद्या के ग्रन्थों को वे अपने साथ ले गये और उन्होंने उन ग्रन्थों का भरपूर लाभ उठाया। आज का ज्ञान-विज्ञान उस जमाने के ज्ञान और शिल्पकला की कौशल की तुलना में कहीं भी नहीं ठहरता, क्योंकि उस समय शिल्पियों को भौतिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी था जो उस यन्त्रकला को उत्कृष्टता प्रदान करता था। शिल्पकला कौशल के अधिकांश ग्रन्थों को उथल पुथल के समय में यवनों ने अग्नि की भेंट कर दिया। यत्र तत्र कुछ ही ग्रन्थ कहीं-कहीं उपलब्ध हैं जिनसे हमें विदित होता है कि अनेक प्रकार के ऐसे यन्त्र उस समय बनाये गये जो अपने आप चला करते थे। यह सब विद्या उन्हें पृथ्वी की आकर्षण शक्ति, विद्युताकर्षण और चुम्बकशक्ति के पूर्ण ज्ञान से प्राप्त थी।

भोजप्रबन्ध में एक लेख है कि राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे-ऐसे शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार का एक यान यन्त्र कलायुक्त बनाया था, जो एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोस और एक घण्टे में साढ़े सत्ताईस कोस जाता था तथा भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था। इसी समय शिल्पियों ने एक ऐसा पंखा बनाया था जो बिना मनुष्य के चलाये कलायन्त्र से नित्य चला करता था और बहुत हवा देता था। यूरोपियनों के पास ये वस्तुएं तब नहीं थी। धम्मपद की कथा में लिखा है कि कौशाम्बी के राजा उदयन से उज्जयिनी के राजा चण्डप्रद्योत की शत्रुता थी। प्रद्योत ने राजा उदयन को धोखे से पकड़ने के लिए एक हस्तीयन्त्र शिल्पियों से बनवाया। यह हाथी लकड़ी का था, रंग सफेद था, अपने आप यन्त्र से चलता था तथा इसमें 60 योद्धा छिपकर बैठ सकते थे। प्रद्योत ने इस हाथी को उदयन के जंगल में छुड़वा दिया। यह हाथी इधर-उधर फिरने लगा और सफेद हाथी की खबर पाकर उदयन उसे पकड़ने के लिए आया परन्तु स्वयं पकड़ा गया। इसी प्रकार महाभारत के आदिपर्व में उत्तक के घोड़े का वर्णन है। यह घोड़ा भी यन्त्र के सहारे चलता था। विमान यन्त्र तो वैदिक काल से ही इस देश में प्रचलित था। वेद में विमान के बनाने की विधि बतलाई गई है। पंचतन्त्र में एक कथा में लिखा है कि एक धूर्त मनुष्य विष्णु का रूप धारण करके गरुड़ की आकृति का एक-एक यन्त्र चालित वाहन लाता था। गयाचिन्तामणि ग्रन्थ में मयूर की आकृति के विमान का वर्णन है। वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड सर्ग 9 में पुष्पक विमान का वर्णन आता है। शालव नामक राजा के पास भी एक विमान था जो भूमि, आकाश, जल और पहाड़ पर भी आसानी से चलता था। सबसे बड़ा विमान कर्दम ऋषि के पास था। बौद्धकाल तक भारत देश में विमान बनाने वाले शिल्पी कारीगर मौजूद थे।

धम्मपद में एक कारीगर का हाल इस प्रकार लिखा है कि बोधि राजकुमार ने एक भव्य महल बनवाया। कारीगर ने उसे बड़ा विचित्र बनाया। बोधिराज ने सोचा कि यह कारीगर कहीं दूसरे का महल भी ऐसा न बना दे, इसलिए उसके हाथ काट लेने चाहियें। राजा ने यह बात अपने सलाहकार से कह दी। सलाहकार ने दयावश कारीगर को संकेत कर दिया। कारीगर ने अपनी स्त्री को कहला भेजा कि वह सब घर बार सब बेचकर एक दिन इस महल को देखने की राजा से प्रार्थना करे। स्त्री ने वैसा ही किया तथा आज्ञा लेकर वह महल देखने गई। कारीगर उसे एक कोठरी में ले गया और स्त्री तथा लड़कों समेत एक गरुड़ यन्त्र पर चढ़कर भाग गया तथा अन्यत्र रहने लगा। इन सब उपलब्ध प्रमाणों से जाना जाता है कि इस देश में विमान बनाने की कला शिल्पियों को खूब आती थी। भारद्वाज ऋषि ने 'अंशुबोधनी' नाम की एक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में विमानों संबंधी अनेक विद्याओं का वर्णन है। अलग तरह के विमान बनाने की अलग-अलग विद्या है। शुक्रनीति अध्याय-4 में बन्दूक, तोप तथा बारूद बनाने तथा इन यन्त्रों को चलाने का विशद वर्णन है। उस जमाने में ऐसा यन्त्र भी बनाया जाता था जो मनुष्य की भांति बोलता था। राजा विक्रमादित्य के सिंहासन की पुतलियां बराबर बोलती थीं। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि रावण ने एक कृत्रिम सीता बनाई थी जो राम का नाम ले-लेकर रोती थी।

दक्षिण हैदराबाद में पत्थरघाटी नाम के ग्राम में बीजापुर राज का एक पुरोहित परिवार है जिनके पास संस्कृत पुस्तकों का एक बड़ा पुस्तकालय है। यह परिवार पुस्तकालय की अच्छी देखभाल कर रहा है। इसमें एक संस्कृत की पुस्तक है जिसमें अनेक विद्याओं के वर्णनों के साथ दूर देश में समाचार भेजने वाले यन्त्र का भी वर्णन है। इसमें लिखी हुई विधि के अनुसार दो पत्थरों को बनाकर चाहे जितनी दूरी पर रखकर उनके द्वारा बातचीत कर सकते हैं। साथ ही एक पत्थर पर जो कुछ लिखे वैसा ही दूसरे पर भी स्वत: लिखा जाता है। ऐसे यन्त्रों द्वारा ही राजा दश हजार कोस की बात जान जाते थे।

इससे स्पष्ट होता है कि शीघ्र खबर पहुँचाने वाले यन्त्रों का आविष्कार हो चुका था। पुराने जमाने में सूर्यकान्तमणि का तो आविष्कार किया ही था किन्तु उससे भी सूक्ष्म चन्द्रकान्तमणि का भी आविष्कार कर लिया था। चन्द्रकान्तमणि के द्वारा चन्द्रमा से पानी बनाया जाता था और बीमारों को पिलाया जाता था ऐसा सुश्रुत में लिखा है। अब तक यूरोप की बढ़ी हुई साइंस भी ऐसा वैज्ञानिक यन्त्र नहीं बना सकी हैं।

शिविर सूचना

सरल आध्यात्मिक शिविर का आयोजन

दिनांक 28 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2013 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

अध्यक्षता : **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** (रोजड़ वाले)

आशीर्वचन : **पूज्यपाद आचार्य बलदेव जी**

शिविर में भाग लेने वाले साधक को पंजीकरण करवाना अनिवार्य है तथा शिविर शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव 27.10.13 की सायं तक पहुँचें।

निवेदक : प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

सम्पर्क सूत्र : 9355674547, 9466008120, 9215676662

आर्यों के तीर्थ

दयानन्दमठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब)

को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्तूबर, 2013

को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- **स्वामी सदानन्द सरस्वती**

अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

ईश्वर कृपा से ही शुभकार्य

-: वेद-मन्त्र :-

त्वमग्ने यज्ञानाꣳहोता विश्वेषाꣳहितः।
देवेभिर्मानुषे जने॥ 2॥ (सामवेद)

शब्दार्थ—हे [अग्ने] उन्नति की ओर ले जाने वाले प्रभो! [त्वम्] आप [विश्वेषाम्] सब [यज्ञानाम्] शुभकर्मों के [होता] सम्पन्न कराने वाले हो [देवेभिः] प्रकाशित गुणों वाले आप [मानुषे जने] मननशील मनुष्य में [हितः] विराजमान होते हो।

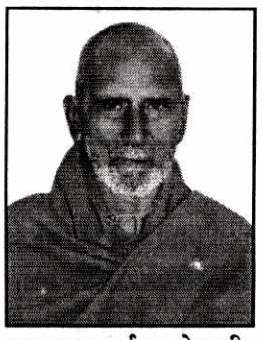
पूज्य आचार्य बलदेव जी

व्याख्या—जो शुभकर्म जीव (मनुष्य) कर रहा है प्रभु की कृपा का ही फल है। प्रभु की दी गई शक्ति का ही परिणाम है। अच्छे कर्म के लिये उत्साहित करना तथा श्रेष्ठ कर्म करने से हृदय में साहस प्रदान करना उस प्रभु की शुभ कार्य कराने की शैली है। बुरे कार्यों से भय, शङ्का व लज्जा उत्पन्न करना तथा अच्छे कार्य करने के लिये प्रेरणा देना। प्रभु की बुरे कार्य से हटाने तथा श्रेष्ठ कार्य कराने की नीति है। मनुष्य अल्पज्ञतावश ईश्वर की प्रेरणा न सुनकर दुष्टकर्मों से प्रवृत्त हो जाता है, उसका उत्तरदायित्व मनुष्य का होता है।

एक चिकित्सक रोगी के रोग का निदान कर दवाई लिखता है। सहायक दवाई देता है। यदि रोगी ठीक हो जाता है तो चिकित्सक की प्रशंसा होती है, सहायक की नहीं। सहायक चिकित्सक के लिखित पत्र को ठीक प्रकार न पढ़कर उल्टी बना देता है, रोग बढ़ जाता है, भर्त्सना सहायक की होती है। इसी प्रकार मनुष्य सर्वज्ञ की प्रेरणा अल्पज्ञता के कारण नहीं सुनता है। दुष्टकर्मों में प्रवृत्त होता है तो फल जीव को मिलेगा। शुभ कार्य करने की प्रशंसा चिकित्सक के समान प्रभु की होगी। इसलिये मनुष्य अपने मननशील गुण का प्रयोग करके ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार अपने गुण, कर्म व स्वभाव सुधारे। यही मनुष्य की मननशीलता है। मननशीलता का प्रयोग करके ही मनुष्य अपने उद्देश्य ईश्वर-प्राप्ति में सफल हो सकता है। प्रभु तो वेद द्वारा स्पष्ट कर रहा है—**'अन्ति सन्तं न जहाति'** 'पास रहता हूं तेरे सदा पास रे तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूं।' परन्तु **'अन्ति सन्तं न पश्यति'** मनुष्य अज्ञानवश पास में सदैव हृदयस्थ उस प्रभु को नहीं देख पाता। श्रेय और प्रेय दो ही तो मार्ग हैं। सुख के साधनों में चमकीले, लुभाने वाले मार्ग को मनुष्य स्वभावतः अपनाता है। इस बांधने वाले, फंसाने वाले विषयों से बचने के लिये तो घोर तप करना पड़ेगा। **'विद्या ददाति विनयम्'** विनय, सुशीलता, कृतज्ञता आदि गुणों को अपनाने हेतु अभ्यास करना पड़ेगा। पात्र को परमात्मा प्यार करता है। सभी गुणों से युक्त करता है। वर्तमान में अनसमझ माता-पिता अपनी अयोग्य सन्तान को अपार ऐश्वर्य का स्वामी बना रहे हैं। युवक स्वयं भी जीवन नष्ट कर रहे हैं तथा घर का भी सर्वनाश कर रहे हैं। अतः पात्रों को राज्य तथा समाज के कार्य सौंपने चाहियें। अपात्रों, अयोग्यों को नहीं। सभी भ्रष्टाचार आदि पापों को समाप्त करने का यही साधन है।

—आचार्य बलदेव

निर्वाचन

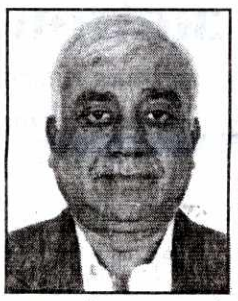

आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय नई कालोनी मोड, गुड़गांव का वार्षिक अधिवेशन गत रविवार को श्री शिवदत्त आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें श्री भारत भूषण आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया। अन्य अधिकारियों के मनोनयन का अधिकार सभा ने प्रधान जी को दिया। प्रधान जी ने 2013-14 हेतु निम्न अधिकारी मनोनीत किये—

प्रधान-श्री भारत भूषण आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान-मा० सोमनाथ आर्य, उपप्रधान-श्री सोमनाथ मल्होत्रा, महामन्त्री-श्री प्रवीन मदान, मन्त्री-श्री नरेन्द्र आर्य, उपमंत्री-श्री राजेश आर्य, श्री यशपाल कमरा, श्री जवाहरलाल मनचन्दा, कोषाध्यक्ष-शिवदत्त आर्य, आयुर्वैदिक कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, भण्डारी-श्री राजीव आर्य, लेखानिरीक्षक-सत्प्रकाश वीर।

—सोमनाथ आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान

पांच यज्ञ

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

यज्ञ किसे कहते हैं?

यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या है उससे उपयोग और विद्यादि शुभगुणों का दान अग्निहोत्र जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम समझता हूँ।

(महर्षि दयानन्द, स्वमन्तव्यामन्तव्य)

पांच महायज्ञ कौन से हैं?

(1) धर्मशास्त्र में लिखा है कि पढ़ना.....ब्रह्मयज्ञ, तर्पण पितृयज्ञ, होम-देवयज्ञ, वैश्वदेव-भूतयज्ञ, अतिथि पूजन से मनुष्य यज्ञ कहाता है। तथा स्वाध्याय से ऋषिपूजन, यथाविधि होम से देवपूजन, श्राद्धों से पितृपूजन, अन्नों से मनुष्य पूजन और वैश्वदेव से प्राणिमात्र का सत्कार करना चाहिये।

(महर्षि दयानन्द, वेदविरुद्धमत खण्डन)

ब्रह्मयज्ञ-सन्ध्योपासन एकान्त देश में एकाग्रचित्त करें—

सन्ध्या और अग्निहोत्र प्रातः सायं दो ही काल में करें। दो ही रात-दिन की सन्धिवेला है अन्य नहीं।

न्यून से न्यून एक घण्टा ध्यान अवश्य करें, जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं वैसे ही सन्ध्योपासन भी किया करें।

(सत्यार्थप्रकाश, समु० 3)

जो मनुष्य नित्य प्रातः और सायं सन्ध्योपासन को नहीं करता, उसको शूद्र के समान समझकर द्विज कुल से अलग करके शूद्र कुल में रख देना चाहिए। वह सेवा कर्म किया करे और विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत भी न रहना चाहिये। इससे सब मनुष्यों को उचित है कि सब कामों से इस काम को मुख्य जानकर पूर्वोक्त दो समयों में (अर्थात् प्रातः-सायं) जगदीश्वर की उपासना नित्य करते रहें। (पंचमहायज्ञविधि)

(2) देवयज्ञ—सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र करने का समय है। (सत्यार्थप्रकाश समु० 2)

प्रातः और सायंकाल सन्ध्योपासन के पीछे इन पूर्वोक्त (नित्य अग्निहोत्र के) मन्त्रों से ही करें। (महर्षि दयानन्द, पंचमहायज्ञविधि)

(3) **तीसरा पितृयज्ञ** अर्थात् जिसमें देवयज्ञ जो विद्वान् ऋषि जो पढ़ानेहारे, पितर जो माता-पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परम योगियों की सेवा करनी/पितृयज्ञ के दो भेद है एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्रद्धा अर्थात् 'श्रत्' सत्य का नाम है **'श्रत् सत्यं दधाति यया क्रियया सा, श्रद्धया यत् क्रियते तच्छ्राद्धम्'** जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाये उसको श्रद्धा और श्रद्धा से जो कर्म किया जाये उसका नाम श्राद्ध है और **'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितन् तत् तर्पणम्'** जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें उनका नाम तर्पण है, परन्तु यह जीवितों के लिये है, मृतकों के लिए नहीं। (सत्यार्थप्रकाश, समु० 4)

(4) **चौथा वैश्वदेव**—अर्थात् जब भोजन सिद्ध हो तब जो कुछ भोजनार्थ बने उसमें से खट्टा लवण और क्षार छोड़के घृत, मिष्टयुक्त अन्न लेकर चूल्हे से अग्नि अलग धर निम्नलिखित मन्त्रों से आहुति और भोग करें।

(सत्यार्थप्रकाश, समु० 4)

(5) अब पाँचवीं अतिथि सेवा—अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो अर्थात् अकस्मात् धार्मिक सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला पूर्ण विद्वान् परमयोगी संन्यासी, गृहस्थ के यहाँ आवे तो उसका प्रथम पाद्य अर्घ्य और आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर पश्चात् आसन पर सत्कारपूर्वक बिठलाकर खान-पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा शुश्रुषा करके उनको प्रसन्न करें। पश्चात् सत्संग कर उनसे ज्ञान-विज्ञान आदि जिनमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होवे। ऐसे उपदेशों का श्रवण करें और अपना चाल चलन भी उनके सदुपदेशानुसार रखें। समय पाके गृहस्थ और राजादि भी अतिथिवत् सत्कार करने योग्य हैं। (सत्यार्थप्रकाश, समु० 4)

अश्वमेध, गोमेध और नरमेध यज्ञ किसे कहते हैं?

राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करे विद्यादि का दान देनेहारा यजमान और अग्नि घी आदि का होम करना अश्वमेध, अन्न, इन्द्रियां, किरण और पृथिवी आदि को पवित्र रखना गोमेध, जब मनुष्य मर जाये तब उसके शरीर का विधिपूर्वक दाह करना नरमेध कहाता है। (महर्षि दयानन्द, स०प्र०, समु० 11)

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥

(यजु० अ० 22/मं० 14)

पदार्थ—हे (अग्ने) सर्वज्ञ स्वयंप्रकाशस्वरूप होने से विद्या को जनाने वाले परमेश्वर! (यां मेधां) जिस विज्ञानवती यथार्थ धारण करने वाली बुद्धि वा धन को (देवगणाः पितरश्चोपासते) विद्वानों के समूह, यथार्थ पदार्थ विज्ञान वाले रक्षा करने वाले ज्ञानी लोग और योगी लोग धारण करते हैं या प्राप्त होके सेवन करते हैं (तया मेधया) उस बुद्धि वा धन के साथ (अद्य) इसी समय कृपा से (माम्) मुझको प्रशंसित बुद्धि वा धन वाला कीजिए। (स्वाहा) इसको आप अनुग्रह व प्रीति से स्वीकार कीजिए, जिससे मेरी जड़ता सब दूर हो। (आर्याभिविनय+ऋ०दया०कृत यजुर्वेदभाष्य+सत्यार्थप्रकाश)

व्याख्यान—हे परमात्मन्! आप अपनी कृपा से, जो अत्यन्त उत्तम सत्यविद्यादि शुभगुणों को धारण करने के योग्य बुद्धि है, उससे युक्त हम लोगों को कीजिए कि जिसके प्रताप से देव अर्थात् विद्वान् और पितर अर्थात् ज्ञानी होके हम लोग आपकी उपासना सब दिन करते रहें। स्वाहा अर्थात्—

(1) (सु-आहेति वा) अर्थात् सब मनुष्यों को अच्छा, मीठा, कल्याण करने वाला और प्रिय वचन सदा बोलना चाहिए।

(2) (स्वं प्राहेति वा) अर्थात् सब मनुष्य अपने पदार्थ को ही अपना कहें, दूसरे के पदार्थ को कभी नहीं अर्थात् जितना-जितना धर्मयुक्त पुरुषार्थ से उनको पदार्थ प्राप्त हो, उतने में ही सदा संतोष करें।

(3) (स्वा-वागोहति वा) अर्थात् मनुष्यों को यह निश्चय करके जानना चाहिये कि जैसी बात उनके ज्ञान के बीच में वर्तमान हो, जीभ से भी सदा वैसा ही बोलें, उससे विपरीत नहीं।

(4) (स्वाहुतं हविर्जुहोतीति वा) अर्थात् सर्व दिन अच्छी प्रकार सुगन्ध आदि द्रव्यों का संस्कार करके सब जगत् के उपकार करने वाले होम को किया करें। और "स्वाहा" शब्द का यह भी अर्थ है कि सब दिन मिथ्यावाद को छोड़ के सत्य ही बोलना चाहिए।

भावार्थ—मनुष्य लोग परमेश्वर की उपासना और आप्त विद्वान् की सम्यक् सेवा करके शुद्ध विज्ञान और धर्म से हुए धन को प्राप्त होने की इच्छा करें और दूसरों को भी ऐसे ही प्राप्त करावें।

संकलन व संपादन : **स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक (उपाध्याय)**
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़, पत्रा.-सागपुर, जिला साबरकांठा
गुजरात-383307 फोन : 02770-287418, 287518

भजन -2

(तर्ज—नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे गाता जाये बंजारा)

टेक:—विषय विकार छोड़ के न तू नेक कमाई कर बन्दे,
जाना ईश्वर के घर बन्दे.....,

1. भले गुणों को धारण कर और सब अवगुण का करदे त्याग,
हो शिष्टाचार व्यवहार तेरा जे चाहे तेरे अच्छे भाग,
किस्मत जागी जाग तेरी मतना फिकर करे बन्दे,
जाना ईश्वर के घर बन्दे.....।

2. बुरा संग और बुरा विचार, बुरी पुस्तक बुरा धन छोड़ दे,
बुरी दृष्टि बुरा कर्म बुरी मित से मन ने मोड़ दे,
भीतरले का गर्व तोड़ दे जे चाहवे सफल सफर बन्दे,
जाना ईश्वर के घर बन्दे.....।

3. स्नान संध्या जप स्वाध्याय देवों की पूजा करले,
बलिवैश्वदेव पितृयज्ञ क्षमाभाव मन में भरले,
अतिथिसेवा और दान ये नौ कर्म तेरे सिर बन्दे,
जाना ईश्वर के घर बन्दे.....।

4. काम करे विचार के और बुद्धि से जो लेता काम,
मननशील गुणवान् हो मनुष्य उसी का होता नाम,
आर्य जी सुखधाम है मन में रटले हर बन्दे,
जाना ईश्वर के घर बन्दे.....।

—रायसिंह आर्य, गांव-डा० घोघड़िया, जिला जीन्द (हरयाणा)

आर्यसमाज सैक्टर 21,22,23 गुड़गांव का द्वितीय वार्षिकोत्सव

दिनांक 28-29 सितम्बर 2013 (शनिवार-रविवार)
आमन्त्रित विद्वान्
आचार्य सत्यव्रत जी रोहतक,
आचार्य सुश्रुत सामश्रयी पानीपत
भजनोपदेशक : श्री श्यामवीर राघव जी
कार्यक्रम स्थल : कम्युनिटी सैंटर, सैक्टर 22 बी, गुड़गाँव
इस कार्यक्रम में आप सादर आमन्त्रित हैं।
—**धर्मदेव नागपाल** प्रधान मो० 09899330942

आर्य सम्मेलन

आर्यजनों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी वैदिक सत्संग सभा शुगर मिल्स महम (रोहतक) में दिनांक 12 व 13 अक्तूबर 2013 को आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

यदि आप अपने परिवारों में उच्च आदर्शों की स्थापना करना चाहते हैं तो अपने इष्ट मित्रों व परिवार सहित सम्मेलन में भाग लेकर आमन्त्रित विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन सुनकर धर्मलाभ उठायें व जानें कि वेदमाता की ज्ञानमयी निधि ही मानव के सर्वांगीण विकास का आदि स्रोत है।

निवेदक : सत्यपाल आर्य, जयप्रकाश आर्य, महम (रोहतक)

शोक-समाचार

दिनांक 8 दिसम्बर 2013 को श्रीमती परमेश्वरी देवी पत्नी स्व० महाशय हरिदत्त जी द्वारका का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्रीमती परमेश्वरी आर्या बड़ी श्रद्धालु तथा धर्मपरायणा उत्तम संस्कारों से ओतप्रोत थी। उन्होंने अपने सद्विचारों से पूरे परिवार को उत्तम संस्कारों से तैयार किया। इस परिवार का दिल्ली रहते हुए भी अपने पैतृक गाँव और आर्यसमाज सांघी से विशेष सम्बन्ध था।

दिनांक 11 सितम्बर 2013 को स्वर्गीया परमेश्वरी देवी की स्मृति में उनके निवास स्थान द्वारका में शान्तियज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें सभी निकट व दूर के सम्बन्धी सज्जन पुरुष तथा आर्यजनों ने शामिल होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। परिवार ने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसर के लिए स्वर्गीया माता जी के नाम से 1,20,000/- रु० एफ.डी. बनवाकर उसके ब्याज की राशि प्रचार करवाने का संकल्प लिया और उनके नाम से स्कूल त्रिवेणी (बड़, पीपल तथा नीम के पौधे) लगाने का निर्णय किया। अपने पूर्वजों की ही तरह भविष्य में धार्मिक कार्यों में पूरा-पूरा सहयोग देने का संकल्प लिया। श्री सतपाल, श्री अनिल, श्री जोगिन्द्रसिंह, ओमप्रकाश आर्य, भलेराम आर्य तथा नरेन्द्रसिंह ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा स्व० परमेश्वरी देवी की मृत्यु के पश्चात् परिवार व अन्य आर्यजनों को जो दुःख हुआ है उसे सहने की शक्ति प्रदान करे। —**भलेराम आर्य व देवेन्द्र आर्य, सांघी (रोहतक)**

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर (रेवाड़ी)	21 से 22 सितम्बर 2013
2.	आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड, जीन्द	26 से 29 सितम्बर 2013
3.	आर्ष भगवती कन्या गुरुकुल जसात, गुड़गांव	28 से 29 सितम्बर 2013
4.	वार्षिक महोत्सव, आर्यसमाज महेन्द्रगढ़	28 से 29 सितम्बर 2013
5.	आर्यसमाज जांट (रेवाड़ी)	2 अक्तूबर 2013
6.	आर्यसमाज बेगा, जिला सोनीपत	2 से 4 अक्तूबर 2013
7.	आर्यसमाज जलियावास, जिला रेवाड़ी	5 से 6 अक्तूबर 2013
8.	आर्यसमाज गोहानामण्डी, जिला सोनीपत	9 से 13 अक्तूबर 2013
9.	आर्यसमाज बीगोपुर, जिला महेन्द्रगढ़	12 से 13 अक्तूबर 2013
10.	ओम् साधना मण्डल, करनाल	16 से 17 नवम्बर 2013

—**प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

www.thearyasamaj.org

उत्तर भारत में गोतस्करों का आतंक

❑ शमशेर नहरा, 397/22, दुर्गा कॉलोनी रोहतक मो० 9466385012

उत्तरी भारत विशेषकर हरियाणा में मौत के सौदागर बने पशु कसाईयों के आतंक की तरफ दिलाना चाहता हूं जिन्होंने आजकल पूरे हरियाणा के लोगों का विशेष रूप से पशु पालकों का दिन का चैन और रात की नींद छीन ली है। वैसे तो उत्तरप्रदेश, दिल्ली व पश्चिम बंगाल के बूचड़खानों में वध करने के लिए काफी लम्बे समय से पुलिस की नाक के नीचे पशुओं की अवैध रूप से तस्करी होती रही है लेकिन पिछले कुछ वर्षों से बूचड़खानों के मालिकों, पशु तस्करों व स्थानीय एजेंटों के जबरदस्त नेटवर्क के चलते हरियाणा के नारनौल से लेकर अम्बाला तक पशु तस्करों के हथियार बन्द गिरोहों ने पशुपालकों के घरों से दुधारू गायों व भैंसों को लूटना शुरू कर रखा है। लावारिस गाय व पंचायती भैंसे भी इन कसाइयों का आसान शिकार बनते हैं। पशु लुटेरों, पशु माफियाओं व पशु तस्करों का नेटवर्क कितना मजबूत है इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हरियाणावी नस्ल की जवान गाय पश्चिम बंगाल के रास्ते गंगा नदी में नाव के जरिये बांग्लादेश तक तस्करी करके ले जाई जा रही हैं।

अभी तक इन पशु लुटेरों का शिकार ज्यादातर अपने गांव से बाहर खेतों में डेयरी पालन का धन्धा करने वाले पशुपालक ही होते थे लेकिन पशुओं की लगातार घटती संख्या व बूचडखानों में बढ़ती मांग के चलते इन कसाइयों ने गांव देहात के बाहरी हिस्सों में मकान बनाकर रहने वाले पशुपालकों को अपना निशाना बनाना शुरू कर दिया है। स्थिति की गम्भीरता का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बीते वर्ष 2012 में अकेले महेन्द्रगढ़ क्षेत्र के आसपास से 350 से ज्यादा दुधारू भैंसे घरों से चोरी हो चुकी हैं। झज्जर, रोहतक के भी अनेक गांवों से दुधारू भैंसें व गऊयें व झोटे चोरी होने की खबरें हैं। दुधारू पशुओं की इस विशाल पैमाने पर हो रही लूट से पशुपालकों के परिजन दूध से तो वंचित हो ही रहे हैं, पशुपालक आर्थिक रूप से भी कंगाल हो रहे हैं। उल्लेखनीय है कि आज दुधारू भैंस की कीमत 40000 रूपए से लेकर 1 लाख रूपए तथा दुधारू गाय की कीमत 10 हजार से 50 हजार रूपए तथा पंचायती भैसे की कीमत 1 लाख रूपए से 3 लाख रूपये तक आंकी जाती है।

तथाकथित सेक्यूलर नेताओं के सेक्यूलरिज्म के बुर्के के संरक्षण में पशु तस्करों व वैध, अवैध बूचड़खाने चलाने वालों का धन्धा सातवें आसमान पर है। इसी नकली सेक्यूलरिज्म के बुर्के के नीचे हरियाणा का मेवात का इलाका गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध होने के बावजूद खुल्लम खुल्ला गोकशी का अड्डा बना हुआ है।

संविधान व कानून के शासन की बात करने वाली सरकारों की पोल इन तथ्यों से खुल जाती है कि देश में इस समय जहां वैध रूप से चल रहे बूचड़खानों की संख्या 3600 के आसपास है वहीं अवैध रूप से चल रहे कत्लखानों की संख्या 30000 के आसपास है। चालू वर्ष 2013 में आन्ध्रप्रदेश में मंजूरशुदा बूचड़खानों की संख्या 6 है जबकि अवैध रूप से चलने वाले बूचडखानों की संख्या 3100 के आसपास हे। वर्ष 2012 में भारत में 3 करोड़ 64 लाख 30 हजार क्विंटल मांस का उत्पादन हुआ जिसमें से 1 करोड़ 96 लाख 30 हजार क्विंटल मांस की खपत घरेलू थी जबकि 1 करोड़ 68 लाख क्विंटल मांस विदेशों में निर्यात किया गया। भारत का मांस निर्यात में विश्व में पांचवा स्थान तथा घरेलू खपत में सातवां स्थान है। निर्यात होने वाले मांस में से अधिक मात्रा भैंस के मांस की होती है। उपरलिखित आंकड़ों से पता चलता है कि मांस उत्पादन की बहुत बड़ी मात्रा अवैध रूप से चलने वाले बूचड़खानों की होती है जिसके निर्यात व बिक्री से केन्द्र व राज्य की सरकारें निर्यात शुल्क व राजस्व के रूप में करोड़ों रू कमाने में लगी हैं।

पशुवध पर अलग-2 राज्यों में अलग-2 कानून हैं। कुछ राज्यों में पशुवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध है तो कुछ राज्यों में आंशिक। कम्यूनिस्टों के प्रभाव वाले राज्य केरल में पशुवध पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। गौवध पर प्रतिबन्ध का उल्लेख भारतीय संविधान के राज्य के नीति निर्देशक तत्वों की धारा 48 में किया गया है, जिसके अनुसार गौवध पर भी अलग-2 राज्यों में अलग-2 कानून है। उदाहरण के तौर पर हरियाणा में गौवंश के वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध है तथा गौवंश का वध करने वाले को 5 साल की कैद तथा 5000 रू जुर्माने की सजा का प्रावधान है। दिल्ली में भी गौवंश के वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध है तथा 5 साल की कैद व 10 हजार रु० जुर्माने की सजा है जबकि उत्तर प्रदेश में बछड़ी, जवान, बूढ़ी गाय सभी के वध पर पूर्ण प्रतिबंध है तथा 2 साल की कैद व 1000 रू जुर्माना है तथा यू पी में डिब्बा बंद गौमांस का आयात किया जा सकता है लेकिन डिब्बाबन्द गौ मांस के निर्यात पर पूर्ण रूप से पाबंदी है। यूपी में 15 साल की उम्र पार कर चुके खेती लायक न रहने वाले बूढ़े बैल व 15 साल की उम्र पार कर चुके सांड को जो सन्तानोत्पति के सक्षम न रहा हो डाक्टरी सर्टिफिकेट के साथ ही वध किया जा सकता है। लेकिन देखने में आया है कि हरियाणा के मेवात से लेकर दिल्ली, उत्तर प्रदेश में दुधारू गाय, भैंस, बैल, सांड, झोटे, ऊंट, बच्चे, बूढ़े, जवान सभी बेजुबानों का वध कानून को ताक पर रखकर किया जा रहा है। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में बेजुबानों की इतने विशाल पैमाने पर हो रही लूट, तस्करी व वध राजनेताओं के संरक्षण के बगैर सम्भव नहीं हो सकता। पशु तस्करों व कसाइयों को राजनेताओं का संरक्षण किस कद्र हासिल है इसका सबूत धर्म निरपेक्षता के ठेकेदार मुलायम यादव की समाजवादी पार्टी के नेता खुद है।

घटना 29 दिसम्बर 2012 की है। गोंडा जिले की पुलिस ने रात को खड़गपुर नामक कस्बे में 50 बैलों व गायों से भरा ट्रक पकड़ा। पकड़े गये ट्रक को छुड़वाने के लिए पशु तस्कर जिनमें आशुतोष पाण्डे नाम का व्यक्ति भी शामिल था गोंडा के एस.पी नवनीत राणा के पास गए और रिश्वत की पेशकश की। राणा ने स्टिंग ऑपरेशन द्वारा तस्करों की रिश्वत देने की पेशकश को रिकार्ड कर लिया। उसी समय राणा के पास एक और फोन आया। फोन करने वाले ने अपने आपको के सी पाण्डे बताया जो कि यूपी में गन्ना अनुसंधान परिषद के वाइस चेयरमैन के पद पर आसीन थे जिन्हें मंत्रीपद का दर्जा प्राप्त था तथा समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता व राष्ट्रीय सचिव थे। के सी पाण्डे ने एसपी को 1 लाख रूपये की रिश्वत पेशकश की। पुलिस अधिकारी ने फोन पर आई उस काल का ब्यौरा भी रिकार्ड कर लिया। इस केस में सिटी थाना कोतवाली में के सी पाण्डे के खिलाफ एफ आई आर दर्ज करवाई गई। इसके बाद 2 फरवरी 2013 को यूपी पुलिस के अतिरिक्त महानिदेशक कानून व्यवस्था अरूण कुमार ने पत्रकारो से कहा कि राज्य सरकार ने गोंडा की घटना को गम्भीरता से लिया है और अपराधियों के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। 3 फरवरी को यूपी के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने मीडिया से बात करते हुए पूरे मामले की छानबीन कराने व दोषियों के खिलाफ कार्यवाही का भरोसा दिलाया। लेकिन 6 फरवरी 2013 को यूपी के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने पशु तस्करी व गोतस्करी के आरोपियों की मदद करने के दोषी केसी पांडे के खिलाफ कार्यवाही का आदेश देने की बजाय गोंडा के एसपी नवनीत राणा को ही गोंडा से तबादला कर चलता कर दिया तथा के सी पाण्डे को क्लीन चिट दे दी।

वैसे भी सेक्यूलरिज्म के बुखार से ग्रसित कुर्सी परस्त नेता जिनके आंसू बंगलौर, जयपुर, अहमदाबाद, दिल्ली में सिरियल बम ब्लास्टों के आरोपी इंडियन मुजाहीदीन के बाटला हाऊस एनकांऊटर के आंतकवादियों की मौत के वीडियो पर निकलते हो, दिल्ली पुलिस के जांबाज व कर्तव्यनिष्ठ पुलिस इंस्पैक्टर मोहन चन्द शर्मा की शहादत का अपमान करने में जिन्हें तनिक भी लज्जा न आती हो वे बेजुबान गऊ माता व अन्य पशुओं की लूट, तस्करी, पशु क्रूरता व कत्लेआम पर आंसू बहायेगें इसकी उम्मीद करना मूर्खो के स्वर्ग में बसना है।

जिस प्रदेश में कानून के शासन का पालन करने वाले कर्तव्यनिष्ठ अधिकारियों के साथ सत्ताधारी नेताओं का अपना राजनीतिक एजेंडा साधने के लिए इस प्रकार का सलूक किया जाता हो उस प्रदेश की कानून व्यवस्था कैसी होगी इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। **क्रमशः**

आओ संगठित होकर आगे बढ़ें

❑ चाँदसिंह आर्य (चन्द्रदेव), महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर

किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति या अभाव की पूर्ति अथवा अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए संगठन का निर्माण किया जाता है। इस कार्य के लिए सर्वहितकारी नियम बनाकर सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता होती है। संगठन, संस्था या संस्थान में संवाद, संपर्क एवं सहयोग से विकेन्द्रित शक्ति को एकीकृत करके विस्तार करना होता है। संगठन की वृद्धि में, नेतृत्व, कार्यकर्त्ता एवं प्रचारक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इनका ज्ञान जितना परिष्कृत होगा, उतना ही संवाद, वाणी, निर्णय, सेवा और व्यवहार उन्नत होगा। यही संगठन को आगे बढ़ाते हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति को वाणी और व्यवहार की भूलों से बचना चाहिए। इनकी भूलों से समय, सम्बन्ध, संस्कार, शक्ति एवं संगठन की अत्यधिक हानि होती है। हम किसी को सौ बार सम्मान करें, प्रशंसा करें तो कभी वह याद नहीं रखता लेकिन एक बार किया गया अपमान जिन्दगी भर नहीं भूलता। शारीरिक चोटों का घाव तो भर जाता है लेकिन वाणी का घाव नहीं भरता, क्योंकि यह सीधा दिल पर चोट करती है। अत: वाणी के चार दोषों से बचकर सत्य, मधुर, हितकर एवं सार्थक बोलें। व्यवहार एवं स्वभाव एक ऐसी चीज है जिसकी वजह से इन्सान या तो दिल में उतर जाता है या दिल से उतर जाता है। अधिक बोलना भी कई बार हानिकारक सिद्ध होता है। कई महापुरुष समझते कम और समझाते हैं ज्यादा इसलिए सुलझाते हैं कम और उलझाते हैं ज्यादा। जिससे नुकसान ज्यादा होता है। बहुत से कार्य खराब ढंग से करने के बजाय थोड़े कार्य अच्छे ढंग से करने में अधिक लाभ होता है। व्यक्ति कार्य की अधिकता से नहीं, कार्य की अव्यवस्था से थकता है। अत: प्रत्येक कार्य को ज्ञानपूर्वक, विवेकपूर्वक समझपूर्वक, धर्मपूर्वक, बुद्धिपूर्वक करना चाहिए। कोई भी संगठन, संस्था या संस्थान खड़ा तो होता है भावना, उत्साह एवं संकल्प से, लेकिन चलता है सिस्टम, समझ, व्यवस्था एवं निरन्तरता से। सही दिशा में 100 प्रतिशत ईमानदारी के साथ पुरुषार्थ करने से।

क्रियाशील कार्यकर्त्ता के कार्य में भूल या त्रुटि भी हो जाया करती है। ऐसे अवसर पर दुर्जन उपहास करते हैं लेकिन सज्जन व्यक्ति जो संगठन, संस्था, समाज के हितैषी होते हैं, वे सही मार्गदर्शन करके उत्साह बढ़ाते हैं, प्रोत्साहित करते हैं। जो गलती नहीं कर सकता उसे भगवान् कहते हैं। जो गलती करके सम्भल जाये उसे इंसान कहते हैं। जो गलती पर गलती करे उसे शैतान कहते हैं और जो गलती को न माने उसे हैवान कहते हैं। कहा भी गया है—बन न सके भगवान् अगर हम कम से इंसान बनें, न ही कभी शैतान बनें हम, न ही कभी हैवान बनें। बहुत से व्यक्ति बड़ी गलती करके भी महान् बने हैं जिनमें दलितोद्धारक भक्त फूलसिंह, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, आर्य वीर रामप्रसाद बिस्मिल एवं कवि अमीचन्द आदि नाम विश्वविख्यात हैं। इंसान को ठोकरें भी सिखाती हैं, सन्मार्ग दिखाती हैं।

दो प्रकार के व्यक्ति असफल होते हैं—एक तो वे जो करते हैं सोचते नहीं। दूसरे वे जो सोचते हैं करते नहीं, लेकिन सफल वे होते हैं जो कार्य करने से पहले हर पहलू पर हर दृष्टिकोण से हजार बार सोचते हैं, विचार करते हैं लेकिन कार्य पूर्ण हुए बिना बीच में नहीं छोड़ते हैं, चाहे हजार-हजार मुसीबत आए। हमें हर जगह पूर्णता की भी इच्छा नहीं करनी चाहिए। हर व्यक्ति हर कार्य में पूर्ण नहीं होता, जैसा पात्र हो उससे उसी प्रकार का उपयोग लेना चाहिए। हाथी का पिलाण गधे पर रखेंगे तो हंसी के पात्र ही बनेंगे। अत: योग्यता अनुसार जिम्मेदारी देना व लेना बुद्धिमानी है, समझदारी है तथा संगठन हितकारी है। जब नेतृत्व, प्रचारक, कार्यकर्त्ता, शिक्षक, समाज-सुधारक दौड़ता है तो आम व्यक्ति चलता है और नेतृत्व.... चलने लगे तो आम व्यक्ति बैठ जाता है और नेतृत्व बैठ जाये तो आम व्यक्ति सो जाता है और नेतृत्व सो जाये तो आम व्यक्ति का क्या होगा? अत: आओ हम सब मिलकर सही दिशा में 100 प्रतिशत ईमानदारी के साथ निरन्तरता से स्वार्थरहित होकर ऋषि ऋण को कम करने के लिए दौड़ें। इसी उद्देश्य को लेकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्यवीर दल हरयाणा एवं महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर एवं आप सभी के सहयोग से किए गए थोड़े से कार्य का विवरण निम्न प्रकार है—

13 जुलाई 2013 को वरिष्ठ उपप्रधान कन्हैयालाल जी गुड़गाँव के पिता के शान्तियज्ञ में शामिल हुए।

14 जुलाई प्रात: आर्यवीर दल भिवानी मण्डल की बैठक एवं सायंकाल ग्राम धौड़ (झज्जर) में युवाओं को व्यायाम प्रशिक्षण।

15 जुलाई बहादुरगढ़ ओमेक्स सोसाइटी में यज्ञ।

शेष अगले अंक में....

वार्षिक उत्सव सूचना

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल ग्राम जसात तहसील पटोदी जिला गुड़गाँव (हरियाणा) का 27वाँ वार्षिक महोत्सव 28-28 सितम्बर 2013 शनिवार रविवार को धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेक साधु, महात्मा, उपदेशक अथवा धार्मिक नेता पधार रहे हैं। आप भी अपने परिवार सहित गुरुकुल प्रांगण में पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाएँ।

रविन्द्र कुमार

सह संचालक : कन्या गुरुकुल जसात, जिला गुड़गाँव

मो० : 09416188854, 9992068104

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां
एम डी एच रूह अगरबत्ती
एम डी एच मुस्कान अगरबत्ती
एम डी एच चन्दन अगरबत्ती
एम डी एच पराग अगरबत्ती
एम डी एच नवयुग अगरबत्ती

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

पुण्यतिथि पर यज्ञ व वेदप्रचार का आयोजन

वेदप्रचार मण्डल हिसार के उपमन्त्री मा० दिलबाग सिंह आर्य की माता दड़का देवी की 17वीं पुण्यतिथि पर ग्राम उमरा में यज्ञ व वेदप्रचार 8.9.2013 को किया गया। दिलबाग दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया।

वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने यज्ञ करवाया। प्रधान जी ने गायत्री मन्त्र की सरल शब्दों में व्याख्या की तथा वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी दी। सभा पुस्तकालय अध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही, आर्यसमाज उमरा के प्रधान श्री जयराम आर्य, बृजभान मलिक एसडीओ ने उपस्थित लोगों से ताश व शराब की बुराई छोड़ने का अनुरोध किया। तथा माता दड़का को श्रद्धांजलि देते हुए उनको मृदुभाषी, यज्ञप्रेमी, सरल स्वभाव व धार्मिक महिला बताई।

इस अवसर पर श्री बूटासिंह मलिक, टेकराम पहलवान, बलवन्तसिंह आर्य, प्रतापसिंह मलिक, श्रीमती सन्तोष आर्या, सत्यपाल फौजी, बलवीर सिंह आर्य आदि उपस्थित थे।

—प्रवीण आर्य, उमरा (हिसार)

भजन (तर्ज—देशी हरियाणवी)

टेक—था आर्यावर्त नाम भारत का, कभी राज्य अखण्ड विशाल हुआ।
सर्वगुण भरपूर गरिमा यू देश घणा खुशहाल हुआ॥

1. यहाँ ऋषिदेव तपस्वी राजा हरदम ध्यान रहे हर में।
वेदविधि संस्कार समर्पित आदर मान हरेक घर में।
गौरवगाथा गुण पवित्र आत्म-ज्ञान नारी-नर में।
चक्रवर्ती राज रहा जब चढ़ी धज्जा सिखर में॥
चक्रवर्ती राज..... ॥
राजा प्रजा कालान्तर में उन्हें एक-दूज्जे का ख्याल हुआ।
सर्वगुण भरपूर..... ॥

2. पग-पग पै प्रमाण मिलै आर्यावर्त भूमि पावन।
सर्वश्रेष्ठ सृष्टि में जहाँ बसें बादल जूं सावन।
तीर्थयात्री देश-विदेश से आते हैं यहाँ पै नहावन।
चौगरदे न चलै भण्डारे सदाव्रत लगरे लावन।
चौगरदे न ..... ॥
जब भजन कीर्तन लागै गावन रमणीक दृश्य हरहाल हुआ।
सर्वगुण भरपूर..... ॥

3. क्षेत्रफल जग से न्यारा म्हारी हरि हिफाजत करता है।
जल मग्न समाधि सज्जरी हिमालय शेहरा धरता है।
संकट में रक्षा खातिर ये पूरा पहरा भरता है।
स्वाभिमान भरा नश-नश मैं नहीं किसे तै डरता है।
स्वाभिमान भरा..... ॥
आन बान शान पै मरता है यहाँ हमला अनेक ढाल हुआ।
सर्वगुण भरपूर..... ॥

4. सुनहरा सिंह नरवाल के बैरी युग बिते आपै मरगे।
लूट गए म्हारा कुछ ना बिगड़ा फेर देश के कई टुकड़े करगे।
अपने हक पै सब लड़ते हम शान्ति दूत सन्ता बर्गे।
भर्‌या जोश जवानों में पल्ट म्हारे इब दिन फिरगे।
भर्‌या जोश..... ॥
नपे तुले नक्शे भरगे जै आर्यावर्त अखण्ड उसी ढाल हुआ।
सर्वगुण भरपूर..... ॥

था आर्यावर्त नाम भारत का, कभी राज्य अखण्ड विशाल हुआ।
सर्वगुण भरपूर गरिमा यू देश घणा खुशहाल हुआ॥

—सुनहरा सिंह नरवाल (रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर)-हरियाणा पुलिस
रोहतक। गाँव कथूरा (सोनीपत) मो० 9416357176

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।
—आचार्य बलदेव

हे भगवान्! यह कैसी बीमारी है?

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

'आयुर्वेद' के अनुसार केवल शरीर ही बीमार नहीं होता, मानसिक रोग भी माने गए हैं तथा उनकी चिकित्सा लिखी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने भी शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक रूप से जिसका व्यवहार ठीक हो उसे स्वस्थ माना है। आजकल शारीरिक के साथ-साथ मानसिक रोग भी बढ़ रहे हैं। आजकल कानों में लीड लगाकर मोबाइल पर गाने सुनने का भयंकर मानसिक रोग लोगों को लग गया है। बसों में लड़के-लड़कियों को कानों में लीड लगाये देखा जा सकता है। क्या आप यह विश्वास कर सकते हैं कि ये कोई धार्मिक भजन सुन रहे होंगे? मुझे हैरानी तो तब होती है जब सड़क पार करते हुए भी मैं इन्हें लीड कान में घुसेड़े या घुसेड़ने की तैयारी करते हुए देखता हूँ।

एक तो इससे जो किरणें निकलती हैं, उनके कान के बीच में सीधा संपर्क होने से शारीरिक स्वास्थ्य की हानि होती है, भद्दे गाने सुनने से मन दूषित होता है। कहीं भी लीड लगाना, सामाजिक सदाचार की दृष्टि से अनुचित है।

इससे सड़क व रेल दुर्घटना में अनेक जवान अपने जीवन से हाथ धो डाला। कहां तो इस देश का आदर्श था कि खाली समय 'ओ३म्' का जाप करें और आज लड़के, लड़कियां, पुरुष, महिलाएं कानों में लीड डाले सफर करते व घूमते हैं। हे भगवान् ये कैसी-कैसी बीमारियां आर्यावर्त में पनप रही हैं।

पाप क्षमा के भ्रम में फँसे लोग.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

विद्याहीनों के सिवाय कौन कह और मान सकेगा? इसीलिए परमेश्वर का जाना-आना, जन्म-मरण कभी सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिये राम, कृष्ण, ईसा आदि को भी ईश्वर के अवतार नहीं, ऐसा समझ लेना क्योंकि राग, द्वेष, तृषा, भय, शोक, दुःख, सुख, जन्म-मरण आदि गुणयुक्त होने से मनुष्य थे, अवतार नहीं।

यदि मनुष्य मूर्तियों के स्थान पर ईश्वर की प्रार्थना, उपासना करे तो पाप कर्म करने से बच सकते हैं, किये पाप कर्म तो भोगने ही पड़ेंगे, उसको ईश्वर क्षमा कभी नहीं करेगा और मूर्ति में तो कुछ करने की सामर्थ्य ही नहीं है, वह अपनी रक्षा नहीं कर सकती। यदि कुछ क्षमता होती तो उत्तराखण्ड में हजारों लोगों को मृत्यु से बचा लेती। लोग यह समझते हैं कि हमने चार धामों की चात्रा कर ली हम धन्य हो गये। सब दुःख दूर हो गये और सीधे स्वर्ग में ही जायेंगे। यदि अन्धविश्वास की धारा में लोग न बहे होते तो समय से पूर्व मृत्यु को प्राप्त न होते। जो गलत मान्यताएँ हैं, उन्हीं के कारण लोग दुःखों को स्वयं आमन्त्रित करते हैं। यथा राजा तथा प्रजा, सब राजा वेदवेत्ता होते थे तो जनता भी वेदानुसार ईश्वर आज्ञा का पालन करती थी जैसा कि महाराज अश्वपति ने घोषणा की थी कि मेरे राज्य में कोई चोर, लुटेरा, शराबी, जुआरी, मांसभक्षक, वेश्यावृत्ति आदि नहीं है। ऐसे राजा भी हुए हैं जिनके राज्य में लोग घरों को ताला नहीं लगाया करते थे। आज वेदज्ञान छूट गया, वेद ज्ञान के अभाव में लोग पाखंडियों के पाखण्ड में फँसकर मन्दिरों में मूर्तिपूजा और तीर्थयात्राओं में धर्म अर्थ काम मोक्ष को खोज रहे हैं। बहुत दुःख होता है सरकार इस प्रकार के अन्धविश्वास को रोकने के स्थान पर बढ़ावा दे रही है जो नेता जाने माने लोग, उद्योगपति आदि हैं, वे मन्दिरों में दान देने और मूर्ति के आगे मत्था टेककर अपनी सफलता की दुआएँ करते हैं, जबकि मूर्ति जड़ है, वह स्वयं अपने लिए व अपनी रक्षा करने में सक्षम नहीं है।

यदि महर्षि दयानन्द की बात को देशवासियों ने मान लिया होता तो आज जिनको धर्मस्थल, पूजास्थल माने बैठे हैं, इन पर दुर्घटनाएँ न घटती। इन मन्दिरों, धर्मस्थलों में इतना रुपया, धन-दौलत, सोना-चाँदी जमा है कि देश में इस धन से ईमानदारी से सुव्यवस्था की जाये तो इस देश का सारा कर्जा उतर जाय, इनको स्कूलों में परिवर्तित कर दिया जाय तो कोई देश का बच्चा अनपढ़ न रहे। देश का अन्धविश्वासों के कारण विनाश हो रहा है। अर्थ-व्यवस्था देश की चरमरा गई है चारों तरफ लूट-खसोट का माहौल उत्पन्न हो गया है।

किसी का इस ओर ध्यान नहीं जाता। चिन्ता केवल कुर्सी को कायम रखने और धन एकत्रित करने पर है। देश का भविष्य क्या होगा? यह एक चिन्ता का विषय है।

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज राखी खास का तीन दिवसीय वेदप्रचार सम्पन्न

आर्यसमाज राखी खास जिला हिसार द्वारा स्वामी ब्रह्मपुत्र जी के सान्निध्य में 6 सितम्बर से 8 सितम्बर तक खुले स्थान पर यज्ञ, भजन, प्रवचन के माध्यम से वेद का ज्ञान जन-जन तक पहुँचाया गया।

प्रथम दिन स्वामी जी ने यज्ञ कराया और उसका महत्त्व बताया। यज्ञ से वातावरण सुगन्धित होता है, रोगों का निवारण होता है और अच्छे संस्कारों का निर्माण होता है। तीनों दिन प्रसिद्ध भजनोपदेशक रामनिवास आर्य ने अपनी मधुर वाणी से ईशभक्ति, महर्षि दयानन्द के भजन, कन्या भ्रूणहत्या व देशभक्ति के गीतों से बहुत अच्छी प्रस्तुति दी।

8 सितम्बर को मुख्य विद्वान्, त्यागमूर्ति तपस्वी आचार्य बलदेव जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, आचार्य योगेन्द्र आर्य प्रधान हरियाणा गोशाला संघ, आचार्य आत्मप्रकाश जी, प्राचार्य गुरुकुल कुम्भाखेड़ा हिसार से पधारे। आचार्य बलदेव जी ने हमें बताया कि हमें ईश्वर की भक्ति अवश्य करनी चाहिए। जब हम ईश्वर की शरण में होते हैं, हमें किसी भी चीज से भय नहीं होता। उसके बाद सभी ने अपने-अपने प्रवचनों से कार्यक्रम को भक्तिमय बना दिया।

आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार से आर्य युवक परिषद् के कार्यकारी प्रधान श्री दलवीर आर्य अपने सहयोगियों के साथ पहुँचे। उन्होंने आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार की तरफ से 15000/- रु० की राशि से सहयोग दिया।

मुख्य अतिथि श्री अजय सिंधु (अध्यक्ष युवा भाजपा जिला हिसार) ने भी आर्यसमाज के विषय में अपने विचार रखे और 5100/- रु० की व्यक्तिगत दान राशि से सहयोग दिया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री सुन्दर आर्य, सन्दीप जांगड़ा, श्योनारायण आर्य, रामकुमार आर्य, रामवीर आर्य, पवन आर्य, सुरेश चहल, सज्जन आर्य, बलवन्त आर्य, अमरजीतआर्य, मनदीप आर्य, योगेश आर्य व पूरे गाँव ने पूरा सहयोग दिया। अन्त में प्रधान सुभाष आर्य ने सभी का धन्यवाद किया।

आचार्य सत्यवीर प्रेरक द्वारा प्रचार विवरण

इस स्तर के शिविरों के माध्यम से आचार्य सत्यवीर प्रेरक द्वारा प्रचार कार्य का मुख्य विवरण इस प्रकार से है—20 मई से 5 जून तक नेपाल में विराट् नगर तथा काठमाण्डु में शिविरों एवं यज्ञ आदि का कार्यक्रम रहा। 10 जून से बास हिसार में साप्ताहिक शिविर, 20 जून से खेड़ी आसरा झज्जर, जुलाई में झज्जर तथा भिवानी के विभिन्न छोटे शिविर, 4 अगस्त से 11 अगस्त तक आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर तथा 15 अगस्त से राजस्थान के गंगानगर, फलौदी, बीकानेर, भादरा आदि और एक दिन का कार्यक्रम बालसमन्द हिसार में रहा।

इस प्रकार से इन विभिन्न शिविरों आदिके कार्यक्रमों में जनजागरण, स्वास्थ्य लाभ के लिए योगासन, प्राणायाम एवं व्यायाम के कार्यक्रम के अतिरिक्त यज्ञ-हवन जिसमें 10-10 किलोग्राम घी से भी यज्ञ किये गए। इन शिविरों में ऋषि दयानन्द जी के दिखाए गए मार्ग के अनुसार ईश्वरभक्ति, देशभक्ति, माता-पिता आदि बड़ों की सेवा-सत्कार, यज्ञोपवीत एवं चोटी रखने की प्रेरणा के साथ-साथ धूम्रपान, शराब, मांस, अण्डे आदि दुर्व्यसनों से दूर रहते हुए अपना तथा समाज का निर्माण करने की प्रेरणा देते हैं।

धन्यवाद कृष्णचन्द्र गर्ग

(हिन्दुओं की कमजोरियां) संकलित विचार आपने आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक पत्रिका में छपवाकर उत्तम किया लेकिन गर्ग साहब आपको मालूम हो कि जो संदेश आप हिन्दुओं को देना चाहते हैं, वे तो हिण्डन नदी में डूब मरे। हिन्दू महाराणा प्रताप थे, शिवाजी थे, महाराजा सूरजमल आदि हिन्दू नेताओं ने देशहित में अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। 18वी-19वीं सदी में कुछ हिन्दू रियासतों के राजाओं ने देशहित के प्रयत्न किये। रानी झांसी, राजा रामसिंह आदि के पास स्वामी विरजानन्द ने देशहित के लिये संदेश भेजे तथा स्वामी दयानन्द ने भी देशहित के लिये संकल्प ले लिया लेकिन हिन्दू मन्दिरों तक सीमित होकर रह गये केवल इसी काल में ही नहीं इससे पूर्व भी हिन्दुओं ने मन्दिर संस्कृति की आड़ में हिन्दुत्व का विभाजन करा डाला, जैन समाज, बौद्ध समाज, आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज आदि को इनके कुकृत्यों के कारण अलग होना पड़ा। ये हिन्दू यहीं थम गये होते तो भी देखा जाता 20वीं शताब्दी में विड़ला मन्दिर में गाँधी ने बैठकर हरिजन समाज की स्थापना कर डाली। इस काल में स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, नेताजी सुभाष, मदन मोहन मालवीय, बालगंगाधर तिलक आदि योग्य नेतृत्व ने हिन्दुओं को कुछ संभाला अवश्य लेकिन इनकी ताकत पर हावी थे कुछ गाँधी जी के साथ साम्प्रदायिक व्यक्ति। इन्हीं दिनों भारतीय संस्कृति के रक्षक स्वामी श्रद्धानन्द ने जामा मस्जिद से वेदमन्त्रों के साथ उद्बोधन किया तो भारतीय जनता या हिन्दुओं को आशा बंधी थी कि हिन्दुओं में नेतृत्व क्षमता है लेकिन उनकी नृशंस हत्या के बाद ऐसा दिखाई दिया कि सभी हिन्दू शहीद हो गये। देश में उनकी शहादत पर कोई प्रतिक्रिया दृष्टिगोचर नहीं हुई। स्वामी श्रद्धानन्द के बाद सरदार पटेल, नेताजी सुभाष, लाला लाजपतराय आदि आर्यसमाज के अनेक युवकों ने शहादत देकर देश को आजाद कराया लेकिन सत्ता पर काबिज हुए अंग्रेजों के पिट्ठू यही कारण है कि अभी तक भारत अनेक कारणों से पराधीन ही चल रहा है। —दिनेश शास्त्री, सोनीपत

प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन

12-13 अक्तूबर, (शनिवार-रविवार) 2013

स्थान : अग्रवाल पब्लिक स्कूल तिगाँव रोड, सैक्टर-3 बल्लभगढ़, फरीदाबाद

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा का प्रान्तीय आर्यवीर **महासम्मेलन 12-13 अक्तूबर 2013** को **फरीदाबाद** में किया जा रहा है। इस अवसर पर **आचार्य बलदेव** जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक सभा, **डॉ० देवव्रत सरस्वती** प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल, **आचार्य विजयपाल** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, **डॉ० रामप्रकाश जी** सांसद एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, **ब्र० राजसिंह आर्य** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, **डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार** महामंत्री आर्य वीर दल, डॉ० योगानन्द जी शास्त्री स्पीकर दिल्ली विधान सभा, **प्रो० ओमकुमार आर्य, चौ० हरिसिंह सैनी** हिसार तथा अनेक विद्वान् संन्यासी एवं राजनैतिक एवं सामाजिक नेताओं को आमंत्रित किया जा रहा है।

कार्यक्रम

दिनांक 12.10.2013 प्रातः 10 बजे संस्कृति रक्षा सम्मेलन

दोपहर 1 बजे शोभायात्रा

आर्यवीर सम्मेलन : रात्रि 8 बजे

दिनांक 13.10.2013 सामूहिक शाखा प्रातः 6 बजे

यज्ञ एवं प्रवचन प्रातः 8 बजे राष्ट्ररक्षा सम्मेलन प्रातः 10 बजे से तथा व्यायाम सम्मेलन : 1 बजे

कृपया पधारकर सम्मेलन को सफल बनायें।

भवदीय : वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्य वीर दल हरियाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।